# सामाजिक व्यवस्था पर चोट करती कहानियाँ

**ऋचा द्विवेदी**
संपर्क : 08755192890

संदीप अवस्थी कोई नया नाम नहीं है। उन्हें हम हंस, नया ज्ञानोदय, वर्तमान साहित्य, समकालीन भारतीय साहित्य आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में पढ़ते रहे हैं। उनकी लेखनी आज की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक व्यवस्था पर जिस त्वरा व तल्खी के साथ कटाक्ष करती हुई चलती है, वह अद्भुत है। आज की प्रशासनिक व्यवस्था पर भी प्रहार करने से वह नहीं चूकते, बल्कि उसका एक वीभत्स स्वरूप हमारे सामने लाकर उपस्थित कर देते हैं। उनकी कहानियों में हम कई बार संवेदनशीलता को तार-तार होते देख सकते हैं। रोंगटे खड़े कर देने वाली रोमांचकारी त्रासद स्थितियाँ, अब आगे क्या होगा? जैसे संशयात्मक प्रश्न संदीप अवस्थी की रचनाशीलता की ताकत है। यही कारण है, अवस्थी की कहानियाँ कहीं न कहीं पाठक के अन्तर्मन पर गहरी छाप छोड़ने में सफल हो जाती है। संदीप अवस्थी की कलम समाज से बेबाक, बेख़ौफ बात करती हुई, अहिर्निष प्रहार करती हुई निर्भीकता से चलती है। 'कलेक्टर साहब तथा अन्य कहानियाँ' उनका ऐसा ही कहानी संग्रह है।

'द आर्टिस्ट' कहानी में आप कल्पना कर सकते हैं कि अपने फन में कोई कलाकार किस तरह से पूरी निष्ठा और लगन से समर्पित है। लेकिन यह कलाकार बहुत ही अलहदा है। वह बहुत बड़ा विशेषज्ञ है, सिद्धहस्त है। कहानी पढ़ते हुए कई बार रोंगटे खड़े हो जाते हैं और आप रोमांच, भय, विद्रूपता से भर जाते हैं। 'सत्यं ज्ञानं अनंत ब्रह्म, जीवो ब्रह्मैव नापर' से प्रेरित वह अपने कार्य को बड़ी लगन से करता है। एक स्थान पर वह कहता है- "...मुझसे मुहब्बत भले ही मत कीजिए, पर नफ़रत भी मत कीजिए।" वह कुछ बड़े नामी लोगों को भी अपनी मोक्षदायिनी सूची में सम्मिलित करता हुआ स्वयं के लिए कहता है- "...क्या ?....मैं संत हूँ? भला आदमी हूँ? पागल हो क्या यार?...."

'कलेक्टर साहब' में जिस प्रकार सुमित, सोहनलाल त्रिवेदी की बेटी निकिता से अपनी पहचान छिपाकर विवाह बंधन में बंध जाते हैं, वहीं उनके पिता द्वारा वह बेनकाब भी होते हैं- "...हमार तो यही पेशा है मोचीगिरी का।

"निकिता के आगे धरती घूमने लगी, आसमाँ आग बरसाने लगा...। "निकिता सुमित से कहती है - "....सुमित जाटव की जगह सुमित गौड़, एक ब्राह्मण का मुखौटा पहन रखा था। ....और ऐसे व्यक्ति की

जिसकी खुद की कोई पहचान नहीं।.... तुमको स्वयं अपनी जाति पर शर्म है तभी अपनी असली जाति छुपाकर घूमते हो।"

यह मनुष्य के सामने छली नारी खड़ी थी। सुमित अपराध बोध से भरकर कहता है- " निकिता, मैं शर्मिंदा हूँ। मुझे माफ़ कर दो। "

आखिर में कलेक्टर साहब द्वारा कॉलेज के वार्षिकोत्सव में आरक्षण की वैशाखी त्यागने संबंधी शपथ पत्र का निर्णय सराहनीय और स्वागतोन्मुख है।

'भटकल' कहानी में ज़ेहाद के नाम पर किस तरह से नौकरी की तलाश में सुदूरवर्ती युवा पीढ़ी को आतंकवादी बनाया जा रहा है, इसका बखूबी बेखौफ़ वर्णन किया गया है।

कहानी 'गुनहगार' में लेखक ने बड़े ही मनोयोग से आज की युवा पीढ़ी को दिखाया है कि किस तरह से आज के युवा प्रेम के नाम पर लड़कियों को अपनी जरूरत तक इस्तेमाल करते हैं और मरने पर मजबूर कर देते हैं। उस पर भी कहते हैं -"...ज़िंदगी शह और मात है। वह मात देती उससे पहले मैंने उसे मात दे दी।"

'निकिता कहाँ हो' कहानी में लेखक ने दिखाया है कि एक मध्यमवर्गीय स्त्री जो अपने जीवन-संघर्ष से परेशान हो गई थी, और एक युवा लड़की जो कुछ लड़कों के द्वारा ब्लैकमेल से परेशान थी, आत्महत्या करने जा रही होती हैं, जिन्हें नियति एक दूसरे की ताकत बनाती है। वहीं एक कुत्ता आती हुई ट्रेन को देखकर उन्हें भौंक-भौंककर जैसे वहाँ से हटने को बाध्य करता है। और तीनों एक साथ मिलकर अपना आगे का सफ़र तय करते हैं।

कहानी 'नीली चिड़िया' में फोटोग्राफी की शौकीन नमिता के कैमरे में एक दिन अचानक एक युवा लड़की अपनी बालकनी से कूदने का प्रयास करती हुई नज़र आ जाती है। जिसे देख वह घबराकर उसे ऐसा न करने के लिए दुआ करती है। खुले विचारों की नमिता आखिर उस लड़के का पता भी लगा लेती है, जिसकी वजह से वह आत्महत्या का प्रयास करती है। लेकिन, बाद में, उसी लड़के के माध्यम से नमिता को पता चलता है कि वह लड़की उस लड़के से चार लाख रुपए लेकर अपने नए ब्वायफ्रैंड के साथ चली गई। आज के परिवेश का युवा पीढ़ी पर हो रहे कुप्रभाव का यथार्थ चित्रण है।

'गर्ल्स हॉस्टल' कहानी में लेखक ने विश्वविद्यालय हॉस्टल में बच्चियों के साथ कैसा व्यवहार होता है, इसका सजीव चित्रण किया है। जहाँ "वार्डन, प्रोफेसर से लेकर रसोइया, वॉचमैन, सर्विसमैन, ड्राइवर जब तब जहाँ जो लड़की मिलती उसके शोषण पर उतर आते थे।" रचनाकार को गर्ल्स हॉस्टल के नंगा सच को उजागर करने में पूर्ण सफलता मिली है।

कहानी 'मुझे चाँद चाहिए' में एक वरिष्ठ लेखक किस तरह नवोदित महिला रचनाकार को एक बड़ी रचनाकार बनाने का लालच देकर अपनी काम पिपासा को तृप्त करते हैं। समाज में प्रतिष्ठित इस वरिष्ठ लेखक का कोई कुछ बिगाड़ नहीं पाता। अनवरत उसका हर नयी रचनाकार के साथ यही क्रम जारी रहता है।

'कत्ल' कहानी में एक ईमानदार ए. एस. पी. को अपनी ईमानदारी की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है। ऐसी है हमारी सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था। कितनी घृणास्पद, कितनी विद्रूपता है। जो मंचों से बड़ी-बड़ी बातें तो करते हैं, लेकिन उनके पीछे का सच कितना घिनौना है।

आज के सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक वातावरण के सच को उजागर करती संदीप अवस्थी कहानी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ती दिखाई देती हैं। कितनी प्रांजलता है, पर विद्रूपता को साथ लिए हुए।

कहानी 'हस्बैंड स्वैपिंग' आज के सामाजिक पारिवारिक रिश्तों को अलग ही ढंग से दिखाती है। 'लिव इन' कहानी में लेखक आज के अत्याधुनिक परिवेश को रेखांकित करने में पूर्ण सफल रहा है। आज की युवा पीढ़ी के महानगरीय जीवन के यथार्थ को दर्शाने में लेखक को पूर्णतः सफलता मिली है। जहाँ- " जब मर्जी होगी मैं तुमसे अलग हो जाऊँगी" - जैसे कथन से दीपाली की उच्छृंखलता का पता चलता है।

संदीप की अधिकांश कहानियों से लगता है कि अब वह समय दूर नहीं जब परिवार भी किसी परिवारवाद के रूप में हमारे सामने आएगा। जहाँ परिवार को कैसे बचाया जाय, यह मूल विषय होगा। अवस्थी के लेखन शैली में एक अलग प्रकार का ही नयापन है। कहानी संग्रह उबाऊ नहीं है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि संदीप अवस्थी की कहानियाँ रोमांच, थ्रिलर, सस्पेंस से शुरू होकर आज की भटकती युवा पीढ़ी, अत्याधुनिकता के नाम पर महिला पात्रों की उच्छृंखलता, सामाजिक, राजनैतिक और प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह एवं चोट करती हुई विमर्श की नयी दिशाएँ खोलने में पूर्णतः सफल हैं।

**कहानी संग्रह**- कलेक्टर साहब तथा अन्य कहानियाँ
**लेखक**- संदीप अवस्थी
पहला संस्करण -2018. पृ. सं.- 132
मूल्य -₹ 260/- प्रकाशक- अयन प्रकाश, नई दिल्ली

(**परिचय :** लेखिका युवा समीक्षक हैं, वर्तमान में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद से संबद्ध होकर बतौर अतिथि प्राध्यापक अध्यापन कार्य कर रही हैं।)